International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: (RJIF 5.24)
www.advancedjournal.com
Volume 1; Issue 3; March 2016; Page No. 102-102

श्रीमद्भागवत् में पुरुष का सगुण रहस्य

प्रदीप तिवारी

Sanskrit Dept. Mithila Sanskrit Research Institute, Darbhanga, Bihar, India

षड्गुणयुक्त होने के कारण निर्विकार परब्रह्म को 'भगवान' कहते है, जो सगुण रूप में है। सब द्वन्दों से मुक्त, सब उपाधियों से रहित, सब कारणों का होता एवं कर्ता षड्गुणयुक्त परमात्मा निर्गुण और सगुण सहित है। अप्राकृतिक गुणों से हीन होने के कारण परमात्मा निर्गुण है तथा छः गुणयुक्त होने के कारण परब्रह्म सगुण है। उनके छः गुण है– ज्ञान, शक्ति, ऐश्वर्य, बल, वीर्य तथा तेज। छः गुण समाहित भगवान ही समस्त भूतवासी होने के कारण वासुदेव कहे जाते है। सब प्राणियों के हृदयों में विराजमान परमेश्वर अंतर्यामी हैं।[1] इनकी उपासना ही सगुणभक्ति से युक्त कही जाती है।

भारतीय साधना पद्धति में निर्गुणब्रह्म ही प्राचीनतम् है। परमेश्वर को प्राप्त करने के साधनों में कर्म, ज्ञान, योग और भक्ति मार्ग की गणना होती है।[2] सहज साध्य होने के कारण आचार्यों ने भक्ति मार्ग को प्रमुखता दी है– "आन्यत्मार्त् सौलभयं भक्तौ"।[3] देवों के रूप–दर्शन, उनकी स्तुति के गायन, उनके साहचर्य के लिए उत्सुकता, उनके लिए समर्पण आदि में आनन्द का अनुभव– ये सभी उपादान वेदों में यत्र–तत्र बिखड़े पड़े है।[4] ऋग्वेद के वरूण सूक्त और विष्णु सूक्त आदि में भक्ति के मूल तत्व प्रचुर मात्रा में विद्यमान है।[5] निर्गुण परमेश्वर की अनुभूतियों के लिए मन, आकाश, सूर्य, अग्नि, यज्ञ आदि सगुण प्रतीत होते हैं। छांदोग्योपनिषद्, श्वेताश्वरोपनिशद्, मुंडकोपनिषद् आदि में विष्णु, शिव–अच्युत, नारायण, सूर्य आदि की भक्ति एवं उपासना के पर्याप्त उल्लेख मिलते है।

वैदिक प्रेम की पयस्विनी महाभारत युग आते–आते विलुप्त प्रायः होने लगी। वैष्णव भक्ति की भागवत धारा का विकसित स्वरूप इसी काल में प्राप्त हुआ। यदुवंश की सात्वत् शाखा में प्रवृत्त प्रधान वैष्णव धर्म का उत्कर्ष हुआ। सात्वतों ने ही मथुरा–वृन्दावन से लेकर मध्यभारत, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक होते हुए तमिल प्रदेश तक प्रवृत्तिमूलक, रागात्मक, भागवत् धर्म का प्रचार किया। अभी तक वैष्णव अथवा शैव भक्ति के उपास्य देवगण अथवा परमेश्वर ही थे। महाभारत काल में कृष्ण विष्णु स्वरूप में भागवत धर्म को एक ऐतिहासिक उपास्य का आधार कृष्ण वासुदेव के व्यक्तित्व में मिला। कृष्ण विष्णु के अवतार माने गए और धीरे–धीरे परमेश्वर से उनका तादात्म्य हो गया। इस प्रकार नर देहधारी विष्णु की भक्ति जनसाधारण को सुलभ हो गयी।

भक्तिमार्ग का प्रमुख सम्प्रदाय भागवत एवं वैष्णव धर्म ही है, जिसका उदय ईसा के लगभग 1400 वर्ष पूर्व अनुमानित होता है। तब से लेकर लगभग छठी–सातवीं शताब्दी तक यह अतिछिन्न संप्रदायों तथा शंकर वेदान्त के प्रचार से भागवत धर्म का नवोदित रूप इसका प्रमाण है। रामानुज (1016 सन् 1137) मध्य आदि ने भागवत धर्म को पल्लवित किया और आगे चलकर एकनाथ, निम्वार्क, विष्णुस्वामी, रामानंद, चैतन्य, वल्लभाचार्य आदि ने भक्तिमार्ग का जनसामान्य तक व्यापक प्रचार किया।

वैष्णव धर्म की पुनर्स्थापना एवं प्रचार में श्रीमद्भागवत महापुराण का अभूतपूर्व, योगदान है। एक प्रकार से श्रीमद्भागवत् मध्ययुगीन वैष्णव धर्म का अक्षय स्रोत है। वल्लभ संप्रदाय में तो उसे स्थानत्रयी के साथ सम्मिलित करके 'प्रस्थानचतुष्टय' नाम से भक्ति धर्म का आकार माना गया है।[6] मध्ययुगीन भक्ति की उत्पत्ति और विकास का इतिहास भागवत् पुराण के महात्म्य में इस प्रकार प्राप्त है–

> उत्पन्न द्रविड़े साहं वृद्धिं कर्नाटके गता।
> क्वचित् क्वचिनं महाराष्ट्रे गुर्जरे जीर्णतां गता।।
> तत्र घोर कलेर्योगात् पाखंडैः खंडितांगका।
> दुर्बलाहं चिरं याता पुत्राम्यां सह मंदताम्।
> वृदावनं पुनः प्राप्य नवीनेव सुरूपिणी।
> जाताहं युवतीसम्यक् प्रेष्ठरूपा तु साम्प्रतम्।।[7]

अर्थात् "मैं वहीं द्रविड़ प्रदेश में रागात्मक भक्ति के रूप में उत्पन्न हुई, जो मूलतः यादवों की एक शाखा के वंशज सात्वतों द्वारा लाई गई है, कर्नाटक में बड़ी हुई महाराष्ट्र में कुछ–कुछ पोषण हुआ। गुजरात में वृद्धा हो गई। वहाँ घोर कलियुग के सम्पर्क से पाखंडों द्वारा खंडित अंगवासी से दुर्बल बहुत दिनों तक अपने पुत्रों (ज्ञान–वैराग) के साथ मंदता को प्राप्त हो गई है। फिर कृष्ण की लीला भूमि वृंदावन में पहुँचकर सम्प्रति नवीना, सुरूपिणी, युवती और सम्यक प्रकार से सुन्दर हो गई हूँ। इसमें संदेह नहीं कि मध्ययुगीन रागात्मिका भक्ति का उदय तमिल प्रदेश में हुआ। परन्तु उसके पूर्ण संस्कृत रूप का विकास भागवत धर्म के मूल स्थल वृंदावन में ही हुआ, जिसको दक्षिण के कई आचार्यों ने अपनी उपासना का क्षेत्र बनाया।

मोक्ष के मार्गों में भक्ति युक्त प्रेम मार्ग को सर्वोत्कृष्ट कहा गया है। अर्थ यह है कि सच्चे हृदय से युक्त अथवा सम्पादित भगवान की भक्ति पुनर्जन्म से उसी प्रकार मोक्ष देती है जैसे दार्शनिक ज्ञान के द्वारा निष्काम योग को प्राप्त करते हैं। गीता में श्री कृष्ण ने कहा हैं– मेरे पर आश्रित होकर जो व्यक्ति सम्पूर्ण कर्मों को मुझमें अर्पित करते हुए मुझ परमेश्वर को ही अनन्य भाव के साथ ध्यान योग से निरंतर चिन्तन करते हुए एवं भजते हुये, मुझमें चित्त लगाने वाले ऐसे भक्तों का मैं शीघ्र ही मृत्यु रूपी संसार से उद्धार कर देता हूँ।[8]

संदर्भ–सूची

1. हिन्दू धर्मकोश, डॉ0 राजबली पाण्डेय, पृ0– 465
2. हिन्दी साहित्यकोश, भाग–1, पृ0– 570
3. नारद भक्ति सूत्र– 58
4. ऋग्वेद– 4.19.5.7.88.5
5. हिन्दू धर्मकोश, भाग–1, पृ0– 464
6. हिन्दी साहित्यकोश, भाग–1, पृ0– 565
7. भागवते भागवत माहात्म्यं– 1.48.50
8. गीता– 12.5–7